अच्छे कर्म ही लोगों को दूसरों से अलग और मूल्यवान बनाते है।
– अज्ञात

करॉना वायरस का प्रकोप

उसका कहना है कि अभी साफ नहीं है कि यह नया वायरस कितना खतरनाक है। यह जाने बगैर विश्व के लिए इसे चिंताजनक हालात नहीं कहा जा सकता। लेकिन तमाम देशों ने इससे बचाव की तैयारी शुरू कर दी है। भारत में भी पूरी तैयारी है।

अमित वर्मा।

चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ करॉना वायरस का प्रकोप दुनिया के कई देशों में फैल गया है। इसने 2002–03 में चीन से ही फैले सार्स की याद दिला दी है। सार्स भी एक तरह का करॉना वायरस था। जब वह शुरू हुआ, तो लंबे समय तक चीन की सरकार इसका खंडन करती रही। नतीजा यह हुआ कि यह वायरस बड़ी तेजी से 34 देशों में फैल गया और उससे 750 से भी ज्यादा लोगों की मौत हो गई। लेकिन इस बार चीन ने करॉना के मामले को छुपाया नहीं, इसके बारे में समय रहते सारी जानकारी दुनिया से शेयर की और अपने देश में भी बचाव के अभूतपूर्व कदम उठाए। उसने अपने 13 शहरों को बंद कर दिया है। वहां के निवासियों की आवाजाही पर रोक लगा दी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इस वायरस को गंभीरता से लिया है, लेकिन उसने दुनिया के लिए आपात स्थिति घोषित करने से इनकार किया है। उसने इसे केवल चीन के लिए आपात काल बताया। उसका कहना है कि अभी साफ नहीं है कि यह नया वायरस कितना खतरनाक है। यह जाने बगैर विश्व के लिए इसे चिंताजनक हालात नहीं कहा जा सकता। लेकिन तमाम देशों ने इससे बचाव की तैयारी शुरू कर दी है। भारत में भी पूरी तैयारी है। पिछले कुछ वर्षों में एच1एन1, डेंगू, चिकनगुनिया से निपटने के क्रम में हमारा स्वास्थ्य तंत्र पहले से कहीं ज्यादा सक्षम हुआ है।

करॉना से निपटने के लिए हवाई अड्डों को अलर्ट रहने के निर्देश जारी किए गए हैं। चीन से आने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की थर्मल स्कैनर के जरिए जांच करने का निर्देश दिया गया है। चीन जाने वाले और वहां से आने वाले यात्रियों के लिए यात्रा परामर्श भी जारी किया गया है। देश में आने वाले 96 विमानों के 20 हजार यात्रियों की थर्मल जांच की गई है जिनमें कोई भी व्यक्ति इस वायरस से ग्रसित नहीं पाया गया। पिछले कुछ दिनों में चीन से केरल आए 80 लोगों के स्वास्थ्य पर नजर रखी जा रही है। इनमें बुखार और जुकाम के लक्षण पाए गए हैं।

मुंबई में भी ऐसे लक्षण वाले दो लोगों को हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। इस वायरस के लिए कोई टीका और दवा उपलब्ध नहीं है। दूसरी समस्या यह है कि इसके कुछ ऐसे विशिष्ट लक्षण भी नहीं हैं कि इसकी तत्काल पहचान हो सके। आम तौर पर हम सर्दी–खांसी को सामान्य बीमारी मानकर ही चलते हैं। लेकिन इसे लेकर अब सतर्क होना होगा। इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता फैलाई जानी चाहिए। डॉक्टरों की सलाह है कि हम साफ–सफाई का खासतौर से ध्यान रखें। हाथ अच्छी तरह धोएं।

साबुन या सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें। नॉन वेज खासकर सी–फूड खाने से बचें, क्योंकि यह वायरस सी–फूड से ही फैला है। उम्मीद की जानी चाहिए कि जल्दी ही इस पर नियंत्रण कर लिया जाएगा।

प्रेम का अभिप्राय

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

इस जीवन में प्रेम का महत्त्व कौन नहीं समझता, प्रत्येक मनुष्य को इसकी जरूरत होती है, हम जीवन में हर चीज पा सकते हैं, मगर प्रेम को पाना हमेशा मुश्किल समझा गया है, इसकी क्या वजह है?

मनुष्य प्रेम का अभिप्राय नहीं समझ पाया, एक कविता के द्वारा मैंने इसे व्यक्त करने की कोशिश की है द्य कालचक्र का संचालन, ब्रह्माण्ड के एक बीज से,जो अंकुरित होता है, भावहीन पुरुष के,विभाजन से। इस तरह, गगन भूमि से, अँधेरा रोशनी से, मृत्यु जीवन से, और नर नारी से, पृथिक होता है।

फिर शुरुआत होती है, खोज अपने अर्द्ध अस्तित्व की, पुनर्मिलन की चाह में, प्रेम उत्पन्न होता है, और कई चरणों के बाद, प्रेम को, इस अस्तित्व को, खुदका अभिप्राय मिलता है।

संपादकीय

सोशल आइडेंटिटी

आज के समय में सोशल आइडेंटिटी और उस पर दी ही हमारी जानकारी बहुत खास होती है, जहाँ आज कल कंपनियां जॉब देने से पहले कैंडिडेट का सोशल प्रोफाइल चेक करती है वही अब अपने परफेक्ट लाइफ पार्टनर को चुनने के लिए भी ऑनलाइन मैट्रोमोनियल साइट्स पर जाना पसंद करते है। ऐसा नहीं है की यह सिर्फ युवा लोग ही करते हैं बल्कि माता पिता भी यहाँ वहां भागने से बेहतर किसी मैट्रोमोनियल साइट पर अपने बच्चों का प्रोफाइल अपडेट करना ज्यादा सहूलियत और विश्वसनीय मानते हैं। इससे न तो उन्हें अब अपने रिश्तेदारों तक सीमित नहीं रहना पड़ता है और जहाँ पहले सालों साल लग जाते थे सही रिश्ता मिलने में वहीँ अब इन मेट्रोमोनियल साइट्स से यह काम आराम से घर बैठे हो जाता है जहाँ उनको असीमित प्रोफाइल्स मिलते हैं, जिसमे वह अपने हिसाब से सही निर्णय ले सकते हैं। लेकिन मुद्दा है की हम खुद को सोशल लाइफ में कैसे प्रेजेंट करें तो इसकी शुरुआत में बायोडाटा से करता हूँ , वही बायोडाटा जिसे हम सब ने सुना और बनाया भी होगा जब भी कभी किसी जॉब के लिए अप्लाई किया होगा तो। दुनिया भर के रिज्यूमे टेम्पलेट सर्च कर हम एक अच्छा सा बायोडाटा बनाते हैं और हम सब को पता है की यह कैसा दिखना चाहिए, कैसा होना चाहिए और कैसे इसे प्रभावशाली बनाया जाए। लेकिन जो बायोडाटा टेम्पलेट 10 साल पहले चलते थे क्या वह फॉर्मेट आप आज भी यूज कर सकते हो? सीधा जवाब है नहीं।

यह समय है अपनी सोशल आइडेंटिटी को गंभीरता से लेने का, साहब इज्जत तो इज्जत है ऑफलाइन हो या ऑनलाइन।

उसके चेहरे की मुस्कान और बेरंग आंखों के बीच का अंतर देखना बहुत आसान है। जो बात उसे कइयों से अलग बनाती है, वो यही है कि कैसे उसने इस अंधेरे को चीरना सीख लिया है।

गाने वाली लड़की जब मुस्कराती है

आरती सिंह।

साल 2019 का सॉन्ग ऑफ द इयर का ग्रैमी इसी गाने को मिला है लेकिन इसे गाने वाली लड़की जब मुस्कराती है तो कहीं से भी 'बैड गाइ' नहीं लगती। वो सबसे सुंदर लगती है। उसे देखकर लगता है कि क्या ये वाकई इतनी शांत है जैसी दिखती है। हां, जब वो गाती है तो साफ पता चलता है कि आवाज भले ही धीमी हो, उसके अंदर से इमोशन्स चीख–चीखकर बाहर निकलने के लिए छटपटा रहे होते हैं। उसका संगीत, गानों के बोल और विडियो देखकर किसी के लिए इस बात का अंदाजा गाना मुश्किल नहीं होगा कि 18 साल की इस लड़की के अंदर कितना अंधेरा है। उसके चेहरे की मुस्कान और बेरंग आंखों के बीच का अंतर देखना बहुत आसान है। जो बात उसे कइयों से अलग बनाती है, वो यही है कि कैसे उसने इस अंधेरे को चीरना सीख लिया है।

बिली आइलिश उन आर्टिस्ट्स में से एक है जिन्होंने डिप्रेशन से जंग लड़ी है। आज बिली अपने सामने किसी को उसी दौर से गुजरते देखती है तो उन्हें समझाती है कि खुद से प्यार करना कितना जरूरी है। वो खुद आधी रात को घंटों दीवार ताकते हुए बिना वजह रो चुकी है। आज जो बिली हाथ में ग्रैमी थामे दुनिया के

सामने खड़ी है, उसे कभी ये भी डर लगता था कि पता नहीं वह अपना 17वां बर्थडे भी मना पाएगी या नहीं। आने वाला हर पल इतना भारी लगता था कि आंखें खोलना तो दूर, सांस लेने की विल पावर नहीं बची थी। उस वक्त बिली ने अपनी मां को चुना और उनके सहारे अपनी जिंदगी को। ग्रैमी के ही मंच पर एक और आर्टिस्ट ने भी डिप्रेशन का सामना म्यूजिक की ढाल के साथ किया। 27 साल की डेमी लोवाटो ने जब अपने नए सॉन्ग 'एनिवन' का कोरस गाना शुरू किया तो उन तमाम लोगों की चीख साथ में सुनाई दी जो डिप्रेशन की खाई से निकलना चाहते हैं लेकिन उनके अंदर कोई ताकत नहीं रह जाती। उन्हें किसी से उम्मीद नहीं रह जाती कि कोई उनकी बात समझेगा या सुनेगा, कोई भगवान भी नहीं। डेमी ने ये गाना 2018 में ड्रग ओवरडोज से कुछ वक्त पहले लिखा था। रिहैबिलिटेशन और सोबरायटी के साथ करीब 2 साल बिताने के बाद डेमी ने स्टेज पर वापसी की तो साफ दिखाई दे रहा था कि डिप्रेशन किस हद तक उनकी आवाज में घुल चुका था। उनके सुर तो हमेशा से पक्के थे, अब नसों में दर्द की थकान भी थी।

दुनिया के एक हिस्से में बिली और डेमी जीत रही है, दूसरी तरफ भारत की दीपिका पादुकोण लोगों को समझाने की कोशिश कर रही है कि मेंटल हेल्थ को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए। दीपिका को कुछ दिन पहले वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम ने इसी कोशिश के लिए क्रिस्टल अवॉर्ड दिया तो दीपिका ने कहा कि हर वो इंसान जो इससे गुजर रहा है, वो उसे बताना चाहती हैं, कि वो अकेला नहीं है। बिना बात पेट में खोखलापन दूसरों को भी लगता है, अकेले में रोने से मन हलका करना दूसरों को भी मंच पर खड़े होने की ताकत देता है। बिली ने भी यही कहा है कि आपके सामने कोई डिप्रेशन में हो तो सिर्फ उसे सुनें।

सूडोकु नवताल- 5229 ✱✩✩✩✩ सरल

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5228 का हल

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7

अपना ब्लॉग लक्ष्य पर अडिग

मुकुल श्रीवास्तव।

आंकड़े बता रहे हैं कि इस वित्त वर्ष के पहले छह महीनों में कुल 6.07 लाख करोड़ रुपये की वसूली हुई है जो निर्धारित लक्ष्य 16.49 लाख करोड़ रुपये का महज 37 पर्सेंट है। 2015 से ही केंद्र सरकार की टैक्स वसूली में लगातार गिरावट आती जा रही है जिससे उसके हाथ बंध जा रहे हैं। वित्तीय घाटे के लक्ष्य पर अडिग बने रहना उसके लिए बहुत कठिन हो गया है। सबसे बड़ी चिंता जीएसटी को लेकर है। पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली के अथक प्रयासों से यह लागू तो हो गया, पर इससे वांछित राशि की प्राप्ति नहीं हुई। शुरू में कहा गया था कि कुछ महीनों में यह एक लाख करोड़ रुपये प्रति माह के लक्ष्य से भी ज्यादा होगा लेकिन यह लगभग 90,000 करोड़ रुपये प्रति माह के आसपास ही रहा। कारोबारी इसमें उतना सहयोग नहीं कर रहे हैं और राज्य सरकारों के अधिकारी इसके लिए जोर नहीं लगा पा रहे हैं।